https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

# अंग दर्द सिंड्रोम

के संस्करण 2016

## ६. बीनाइन हाइपरमोबलिटी सिंड्रोम

### ६.१. यह क्या होता है?

हाइपरमोबलिटी उन बच्चों के लिए कहा जाता है जिनके जोड़ अत्यंत लचकीले या ढीले होते हैं।इसे जॉइंट लेक्सिटी भी कहते हैं।कुछ बच्चों को जोड़ों में दर्द भी सकता है।बीनाइन हाइपरमोबलिटी सिंड्रोम उन बच्चों में होता है जिन्हे लचकीले जोड़ों की वजह से जोड़ों में दर्द रहता हो।इन बच्चों को अन्य किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती।इसीलिए ऐसा मन जाता है की यह कोई बीमारी नहीं है बल्कि सामान्य से हट कर एक भिन्नता है।

### ६.२. यह कितनी आम है?

यह बच्चों और किशोरों में काफी आम है व् १० से ३० प्रतिशत बच्चों में खास तौर से लड़कियों में देखी जाती है।यह आयु के साथ कम होती जाती है।कुछ परिवारों में यह कई सदस्यों में पायी जाती है।

### ६.३.इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

हाइपरमोबलिटी की वजह से बच्चों को जोड़ों में रुक रुक कर,धीमा धीमा दर्द होता है।यह दर्द अधिकतर शाम को या रात में घुटने,पैरों व् टखने में होता है।जो बच्चे पियानो या वायलिन बजाते हैं,उनमें यह दर्द हाथों की उँगलियों में होता है।शारीरिक गतिविधि व् कसरत से यह दर्द बढ़ सकता है।कभी कभी जोड़ में हलकी सी सूजन भी आ सकती है।

### ६.४. इस का निदान कैसे किया जाता है?

इसका निदान जोड़ों के लचकीलेपन को नापने के पूर्व निर्धारित मापदंडों को देख कर व् किसी भी अन्य प्रकार की उत्तकों की बीमारी के न पाये जाने पर किया जा सकता है।

**६.५. इसका इलाज कैसे किया जा सकता है?**
इसके लिए किसी विशेष इलाज की बहुत कम आवश्यकता पड़ती है।यदि बच्चे कोई ऐसे खेल, जैसे फुटबॉल अथवा जिम्नास्टिक्स जिनमें जोड़ों में खिंचाव या बार बार चोट लगने का खतरा हो,में भाग लेते हैं तब उन्हें मांसपेशियों को ताकतवर रखना चाहिए व् जोड़ों की सुरक्षा के लिए इलास्टिक की पट्टी इत्यादि का प्रयोग करना चाहिए।

**६.६.दिनचर्या पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?**
यह तकलीफ उम्र के साथ अपने आप ही कम हो जाती है व् किसी भी विशेष इलाज की आवश्यकता नहीं पड़ती।बल्कि सामान्य जीवन व्यतीत न करने देने से बच्चे को अधिक तकलीफ हो सकती है।
माता पिता को बच्चों को सामान्य प्रकार से खेल कूद,जिसमें बच्चे की रूचि हो, में भाग लेने देना चाहिए।